← भारत में समाजशास्त्रीय विचारों का विकास →

→ 19 वीं सदी तक विश्व में ऐसे विज्ञान का अभाव था जो समाज शास्त्र को एक विषय के रूप में पढ़ सके।

→ उस समय वैश्विक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहे थे और इन्हीं परिवर्तनों के परिणामस्वरूप 3 बड़ी घटनाओं ने समाजशास्त्र के उद्भव का मार्ग सुनिश्चित किया -

① यूरोप की वाणिज्यिक क्रान्ति -

(i) इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप कागजी मुद्रा का विकास हुआ, बैंकिंग व्यवस्था का विकास हुआ और मध्यम वर्ग का उदय हुआ।

(ii) यह समय यूरोप में पुनर्जागरण का समय था। इसलिए इसे वैज्ञानिक क्रान्ति की संज्ञा दी गई है।

② फ्रांसीसी क्रान्ति -

(i) इस क्रान्ति ने लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक किया।

(ii) इससे स्वतंत्रता, समानता व बन्धुता (Fraternity) जैसे विचारों का विकास हुआ।

(iii) इस क्रान्ति के बाद फ्रांस में राजशाही का अन्त हुआ और लोकतंत्र की स्थापना हुई।

(iv) रूसो, वाल्टेयर, मोन्तेस्क्यू का इस क्रान्ति में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

③ औद्योगिक क्रान्ति -

मशीनीकरण
↓
उत्पादन में वृद्धि
↓
पूँजीवाद को बढ़ावा
↓
उद्योग/शहरों का विकास

औद्योगिक श्रमिक वर्ग का उदय
↓
लघु श्रमिकों का शोषण

इस शोषण के परिणामस्वरूप इन श्रमिकों की विभिन्न आर्थिक व सामाजिक समस्याएँ उजागर हुई जिन्होंने समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

→ वर्ष 1838 ई. फ्रांसीसी दार्शनिक ऑगस्ट काम्टे ने सर्वप्रथम समाजशास्त्र को एक विषय कहा था। इसलिए उन्हें समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है।

* शुरुआत में इन्होंने इस विषय को सामाजिक भौतिकी कहा और कालान्तर में इसे समाजशास्त्र कहा।

→ 1914 में बॉम्बे वि.वि. में समाजशास्त्र एक ऐच्छिक विषय के रूप में शुरु किया गया।

* 1919 में इस वि.वि. में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की गई।

• इसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति पैट्रिक गिड्स (Patrick Geddes) को मिली।

• 1924 में गोविन्द सदाशिव घुर्ये (G.S. Ghurye) को इस विभाग के पहले भारतीय अध्यक्ष के रूप में चुना गया।

→ 1917 में बिश्वनाथ शील के प्रयासों से कलकत्ता वि.वि. में समाजशास्त्र की शुरुआत की गई।

→ 1921 में समाजशास्त्र एक विषय के रूप में लखनऊ वि.वि. में शुरु किया गया। राधाकमल]

→ 1923 में मैसूर और आंध्रा वि. विद्यालयों में समाजशास्त्र की शुरुआत की गई।

→ वर्ष 1952 में G.S. घुर्ये के प्रयासों से Indian Sociological Society की स्थापना की गई।

* यह संस्था समाजशास्त्र के क्षेत्र में आज भी काम कर रही है।

→ तीन अन्य संस्थाएँ जो समाजशास्त्र के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं-

① Tata Institute of Social Sciences (TISS) - Mumbai
② Tata Institute of Social work - लखनऊ
③ Institute of Social Sciences - Agra

Q. समाजशास्त्र के क्षेत्र में कार्य करने वाली किन्हीं चार मुख्य संस्थाओं के नाम लिखिए।

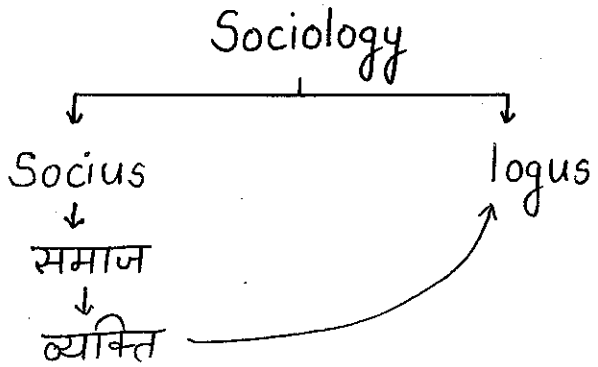

<u>समाजशास्त्र की परिभाषा</u> -

① किंग्सले डेविस ⇒ समाजशास्त्र मानव समाज का अध्ययन है।
② HM जॉनसन ⇒ समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है।
③ गिलिन और गिलिन ⇒ समाज में रह रहे व्यक्तियों के मध्य होने वाली अन्तः क्रियाओं का अध्ययन समाजशास्त्र कहलाता है।

Q. समाजशास्त्र की परिभाषा लिखिए।

जी. एस. घुर्ये -

→ भारतीय समाज शास्त्र के जनक

→ भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के क्षेत्र में कार्य

→ कृतियाँ -

① कास्ट क्लास एण्ड ओक्यूपेशन

② The Indian Sadhus

③ Vedic India

④ Race and Caste in India.

Q. भारतीय समाजशास्त्र के क्षेत्र में जी.एस. घुर्ये के योगदान का वर्णन कीजिए।

← वर्ण व्यवस्था →

→ वर्ण 'वृ' धातु से बना शब्द है। इसका अर्थ होता है - वरण करना या चुनाव करना।

→ चुनाव करने से तात्पर्य व्यवसाय के चयन से है।

→ वर्ण का शाब्दिक अर्थ 'रंग' होता है।

→ आर्यों ने स्वयं के लिए श्वेत वर्ण एवं अनार्यों के लिए कृष्ण वर्ण का प्रयोग किया था।

→ भगवद्गीता में वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।
"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागश : । "
अर्थात् इस सृष्टि के ५ वर्ण गुण अथवा कार्यों पर आधारित हैं।

→ इस व्यवस्था का व्यवस्थित उल्लेख ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के पुरुष सूक्त में मिलता है।

→ ऋग्वेद के अनुसार एक विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्रों का जन्म हुआ है।

→ इन चारों वर्णों में निम्न गुण पाए जाते हैं -

① सात्विक
② राजसिक
③ तामसिक

(I) ब्राह्मण - इनमें सात्विक गुण पाया जाता था।

* इनके मुख्य कार्य -
(i) यज्ञ करना एवं यज्ञ करवाना
(ii) दान देना व दान लेना
(iii) वेदों का अध्ययन और अध्यापन

(II) क्षत्रिय -

* इनमें सात्विक एवं राजसिक गुण पाया जाता था।
* इनके मुख्य कार्य -

(i) रक्षा करना
(ii) अध्ययन करना
(iii) यज्ञ करना
(iv) दान देना

* इस वर्ण को वेदों में राजन्य वर्ण की संज्ञा दी गई है।

(III) वैश्य -

* इनमें राजसिक और तामसिक गुण पाए जाते थे।
* भगवद्गीता के अनुसार वैश्यों का मुख्य कार्य वार्ता था।
* वार्ता से तात्पर्य कृषि, पशुपालन और वाणिज्यिक गतिविधियों से है।
* इनके मुख्य कार्य -

(i) उत्पादन करना
(ii) संग्रहण करना
(iii) अध्ययन करना
(iv) दान देना

(IV) शूद्र -

* यह वर्ण द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) की सेवा का कार्य करता था।
* इस वर्ण को कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे।
* कौटिल्य की अर्थशास्त्र में पहली बार शूद्रों को वार्ता का अधिकार दिया गया था।

इस व्यवस्था से होने वाले लाभ -

① समाज का विभाजन श्रम अथवा कार्य के आधार पर होता था जिससे श्रम विशेषीकरण सुनिश्चित होता था और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न नहीं होती थी।

② समाज में सभी वर्ण एक-दूसरे का महत्व समझते थे। इसलिए यह एक समतामूलक समाज था।

③ इस समाज में प्रत्येक वर्ण की प्रथाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तानान्तरित होती रहती थीं।

④ प्रत्येक वर्ण को कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के प्रति जागरुक बनाया जाता था।

इस व्यवस्था के दोष -

① यह व्यवस्था शुरुआत में कर्म आधारित थी परन्तु कालान्तर में जन्म आधारित हो गई। इसकी वजह से समाज में अनेक कुरीतियों जैसे - अस्पृश्यता का जन्म हुआ।

* इन कुरीतियों की वजह से यह समाज एवं राष्ट्र के विकास में बाधक बनी।

<u>आपद धर्म</u> - इस अवधारणा का विकास गुप्तकाल में हुआ था।

→ इसके तहत किसी भी वर्ण का व्यक्ति आपातकाल की स्थिति में अपने कार्यों को बदलकर अपने वर्ण को बदल सकता था।

शूद्रक - मृच्छकटिका चारुदत्त ↔ वसन्तसेना

Q. वर्ण व्यवस्था के विभिन्न लाभों का उल्लेख करो। 5 marks

Q. वर्ण व्यवस्था के दोष के बारे में लिखिए। 2 marks

Q. विभिन्न वर्णों के मुख्य कार्यों का उल्लेख करो। 2 marks

आश्रम व्यवस्था

→ आश्रम श्रम धातु से बना है जिसका अर्थ होता है अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयास करना।

→ छान्दोग्य उपनिषद् में तीन आश्रमों का उल्लेख मिलता है और जाबाली उपनिषद् में ५ आश्रमों का उल्लेख मिलता है।

→ भारतीय समाज का आयु के आधार पर विभिन्न आश्रमों में वैज्ञानिक वर्गीकरण किया गया था -

① ब्रह्मचर्य आश्रम --

* इस आश्रम में केवल एक पुरुषार्थ धर्म की पालना की जाती थी।
* इस आश्रम में व्यक्ति को विभिन्न विषयाकारों से दूर रहते हुए स्वविकास पर केन्द्रित रहना होता था।
* इस आश्रम में व्यक्ति के अहम को खत्म करने के लिए भिक्षावृत्ति का प्रावधान रखा जाता था।
* ब्रह्मचर्य दो प्रकार के होते थे -

(i) उपकुर्वाण
(ii) नैष्ठिक / अन्तेः वासी

(i) उपकुर्वाण -

- वे ब्रह्मचारी जो वैदिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् समावर्तन संस्कार के माध्यम से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर जाते थे।

(ii) नैष्ठिक / अन्तेः वासी -

- वे ब्रह्मचारी जो अपनी वैदिक शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त गुरुकुल में ही रह जाया करते थे।

- ये ब्रह्मचारी वेदों के अध्यापन का कार्य करते थे और गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं करते थे।

② <u>गृहस्थ आश्रम</u> -

→ इस आश्रम में व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करता है।

→ व्यक्ति धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थ की पालना करता है।

→ व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों के लिए धन का संग्रह करता है।

→ इस आश्रम में व्यक्ति तीन ऋणों से उऋण होता है तथा पाँच महायज्ञों का आयोजन करता है।

→ तीन ऋण - ऋषि
दैव
पितृ

(i) ऋषि ऋण - ऋषियों ने हमें वैदिक साहित्य दिया है।
* इस ऋण से उऋण होने के लिए हमें वेदों का अध्ययन करना चाहिए और फिर शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

(ii) दैव ऋण- इस भौतिक जगत की रचना देवताओं द्वारा की गई है।
* प्रकृति के संसाधनों का उपभोग हमें विवेकशील तरीके से करना चाहिए। (judiciously)
* इस प्रकार हम इस ऋण से उऋण हो पाएंगे।

(iii) पितृ ऋण - धर्मानुसार विवाह कर सन्तानोत्पत्ति से हम इस ऋण से उऋण होते हैं।

Q. ऋण व ऋत में अन्तर लिखिए। 2 marks

Q. ऋण से आप क्या समझते हैं? 2 marks

पाँच महायज्ञ -

(i) ब्रह्म यज्ञ - ऋषियों के प्रति सम्मान को प्रकट करने के लिए इस यज्ञ का आयोजन किया जाता है जिन्होंने वैदिक साहित्य की रचना की है।

(ii) देव यज्ञ - देवताओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए अग्नि के माध्यम से यज्ञ का आयोजन किया जाता है।

* अग्नि को देवताओं व मनुष्य के बीच मध्यस्थ माना गया है।

iii) पितृ यज्ञ - पूर्वजों की आत्मा की शान्ति के लिए पिण्डदान एवं श्राद्ध का आयोजन किया जाता है इससे उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

(iv) अतिथि/मनुष्य यज्ञ - घर आए मेहमान के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिए।

* हमारी संस्कृति में अतिथि को देवता के समतुल्य माना गया है।

"अतिथि देवो भवः।"

(v) भूत यज्ञ - नकारात्मक शक्तियों को दूर रखने के लिए व्यक्ति को पक्षियों एवं कीटों को भोजन कराना चाहिए।

Q. पाँच महायज्ञों के बारे में लिखिए। 2 marks

→ अर्थ पुरुषार्थ के अर्जन की अनुमति केवल इस आश्रम में दी गई है।

③ <u>वानप्रस्थ आश्रम</u> -

→ वानप्रस्थ का शाब्दिक अर्थ है - वनों की ओर प्रस्थान।

→ इस आश्रम में व्यक्ति समाज के कल्याणकारी कार्यों में भाग लेता है।

→ यहाँ व्यक्ति नई पीढ़ी के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

→ व्यक्ति युवाओं को निशुल्क शिक्षा प्रदान करता है।

→ इससे आश्रम का मुख्य उद्देश्य आर्थिक समस्याओं को कम करने से है।

④ <u>संन्यास आश्रम</u> -

→ इसमें व्यक्ति घुमक्कड़ जीवन जीता है तथा लोगों से अपने अनुभव साझा करता है।

→ इसमें व्यक्ति मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है।

<u>आश्रम व्यवस्था का महत्व</u> -

① व्यक्ति में मानवीय मूल्यों का विकास होता था।

② समाज को आर्थिक समस्याओं एवं बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ता था।

③ नई पीढ़ी को हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहता था।

④ व्यक्ति में स्वनियंत्रण एवं स्व-अनुशासन का विकास होता था।

⑤ यह व्यवस्था समाज के वैज्ञानिक वर्गीकरण पर आधारित थी।

Q. आश्रम व्यवस्था का महत्व लिखिए। 2 marks

पुरुषार्थ

"पुरुषैरर्थ्यते इति पुरुषार्थ"

→ जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना ही पुरुषार्थ कहलाता है।

→ ये जीवन के लक्ष्य हैं जहाँ अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है।

→ पुरुषार्थ आश्रम व्यवस्था के नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार हैं।

→ वेदों, पुराणों, उपनिषदों आदि में व्यक्ति के ५ सामाजिक दायित्वों का उल्लेख मिलता है जिन्हें हम पुरुषार्थ कहते हैं।

① धर्म -

"धारयते इति धर्म:।"

→ जीवन में जिसे धारण किया जा सके उसे धर्म कहते हैं।

→ यह व्यक्ति को नैतिकता के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है।

→ यह व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, सहानुभूति, सन्तोष, धैर्य आदि गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

→ यह व्यक्ति को कर्त्तव्यों के पालन की प्रेरणा देता है।

→ पी. वी. काणे (पाण्डुरंग वामन काणे) के अनुसार धर्म का सम्बन्ध किसी ईश्वरीय मत से नहीं है अपितु यह तो एक आचार संहिता है जो मनुष्य के क्रियाकलापों पर नियंत्रण रखती है।

② अर्थ -

→ अर्थ का आशय धन अथवा सम्पत्ति से है।

→ यह जीवन चलाने का एक साधन है।

→ व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थ का होना जरूरी है।

→ इस पुरुषार्थ को धर्म पुरुषार्थ के अधीन रखा गया है। अर्थात् अर्थार्जन सही तरीकों से किया जाना चाहिए एवं उसे सही कार्यों में खर्च करना चाहिए।

→ वी. जी. गोखले ने अपनी पुस्तक 'Indian Thought throgh the ages' में लिखा है कि अर्थ में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं जो परिवार चलाने, गृहस्थी बसाने एवं विभिन्न सामाजिक - धार्मिक दायित्वों के लिए निर्वहन के लिए आवश्यक हैं।

③ <u>काम</u> -

→ काम का आशय सभी प्रकार की इच्छाओं व कामनाओं से है।

→ इस पुरुषार्थ की पूर्ति व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक सन्तुष्टि के लिए आवश्यक है।

→ इस पुरुषार्थ का धार्मिक महत्व यह है कि व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति कर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर है।

④ <u>मोक्ष</u> -

→ बौद्ध धर्म में इसे निर्वाण एवं जैन धर्म में इसे कैवल्य कहते हैं।

→ मीमांसा में स्वर्ग प्राप्ति को मोक्ष कहा गया है।

→ हृदय की अज्ञानता की नाश ही मोक्ष कहलाता है।

→ मोक्ष की प्राप्ति के 3 मार्ग बताए गए हैं -
कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग, भक्तिमार्ग

संस्कार व्यवस्था

→ इसका शाब्दिक अर्थ शुद्धता अथवा पवित्रता है।

→ यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक परिष्कार की एक प्रक्रिया है।

→ संस्कार धर्मानुकूल आचरण के लिए आवश्यक हैं।

→ संस्कार व्यक्ति के सामाजिक विकास में सहायक होते हैं।

→ कई विद्वानों ने संस्कारों की संख्या पर मत दिए हैं जिनमें से अधिकतर विद्वान 16 संस्कारों से सहमत हैं।

① गर्भाधान -

→ माँ की कोख में जीवन की उत्पत्ति के लिए इस संस्कार को आयोजित किया जाता था।

→ इस संस्कार का आयोजन सन्तान की प्राप्ति के लिए किया जाता था।

② पुंसवन -

→ इस संस्कार का आयोजन गर्भाधान से तीसरे, 5th या 6th मास में गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा हेतु किया जाता था।

→ इसमें दम्पत्ति द्वारा उचित औषधियों का प्रयोग किया जाता था।

③ सीमन्तोन्नयन -

→ गर्भाधान के 3-8 वें महीने के बीच इस संस्कार का आयोजन किया जाता था।

→ इसका मुख्य उद्देश्य गर्भवती महिला एवं गर्भस्थ शिशु को अमङ्गलकारी शक्तियों से बचाना था।

④ जातकर्म -

→ जन्म के तुरन्त बाद बच्चे को पिता द्वारा दही, दूध अथवा शहद चखाया जाता था।

⑤ नामकरण -

→ जन्म के 10 वें या 12 वें दिन एक यज्ञ का आयोजन कर बच्चे का नाम रखा जाता था।

⑥ निष्क्रमण -

→ जन्म के चौथे माह में बच्चे को पहली बार घर से बाहर निकाला जाता था।

→ बच्चे को दिन व रात दोनों समय बाहर लाते थे जिससे उसे ज्ञान व ओज तथा (सूर्य) शीतलता व (चाँद) धैर्य की प्राप्ति हो।

⑦ अन्नप्राशन -

→ जन्म के छठें माह में बच्चे को पहली बार ठोस आहार दिया जाता था।

⑧ चूड़ाकर्म -

→ जन्म के पहले अथवा तीसरे वर्ष में बच्चे के केशों का त्याग किया जाता था इससे उसे नीरोगी काया मिलती थी।

→ इसे स्थानीय भाषा में 'जड़ूला उतारना' कहते हैं।

⑨ कर्ण वेध संस्कार -

→ जन्म के तीसरे से 5 वें वर्ष के बीच यह संस्कार आयोजित किया जाता था।

→ इससे बच्चे को नीरोगी काया मिलती थी तथा उसके सौन्दर्य में वृद्धि होती थी।

⑩ <u>विद्यारम्भ</u> -

→ लगभग 5 वर्ष की आयु में बच्चे की अक्षरज्ञान की शिक्षा प्रारम्भ की जाती थी।

⑪ <u>उपनयन</u> -

→ उप = समीप , नयन = ले जाना

→ अर्थात् बच्चे को गुरु के समीप ले जाया जाता था।

→ इस संस्कार में एक यज्ञ का आयोजन कर बच्चे को जनेऊ धारण करवाई जाती थी। इसलिए इसे यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं।

→ इस संस्कार के लिए द्विजों की आयु सीमा -

ब्राह्मण = 8 Y
क्षत्रिय = 11 Y
वैश्य = 12 वर्ष

⑫ <u>वेदारम्भ</u> -

→ लगभग 8 वर्ष की आयु में बच्चे की वैदिक शिक्षा प्रारम्भ की जाती थी।

⑬ <u>केशान्त</u> -

→ लगभग 16 वर्ष की आयु में ब्रह्मचारी अपने केशों का त्याग करता है।

→ इसके माध्यम से उसे स्वच्छता के प्रति जागरुक बनाया जाता है।

→ इस समय ब्रह्मचारी के माता-पिता या अभिभावक उसके गुरु को एक गाय दान में देते थे। इसलिए इसे गोदान संस्कार भी कहते हैं।

(14) समावर्तन संस्कार -

→ 25 वर्ष की आयु में वैदिक शिक्षा पूरी होने के बाद इस संस्कार का आयोजन किया जाता था।

→ यह संस्कार दो आश्रमों (ब्रह्मचर्य व गृहस्थ) के बीच पुल का कार्य करता था।

(15) विवाह -

→ यह सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है। क्योंकि हिन्दू संस्कृति में केवल विवाहितों को यज्ञ के आयोजन की अनुमति प्रदान की गई है (गृहस्थ आश्रम में पाँच महायज्ञों का आयोजन)

→ इस संस्कार के बाद ही व्यक्ति पितृ ऋण से उऋण हो पाता था।

(16) अंत्येष्टि :-

→ जीवन - मरण के चक्र से मुक्ति के लिए इस संस्कार का आयोजन आवश्यक है।

Q. पुंसवन संस्कार के बारे में लिखिए। 2 marks

Q. कर्णबेध संस्कार 2 marks

Q. समावर्तन संस्कार 2 marks

Q. गोदान संस्कार 2 marks

← विवाह →

→ मनुस्मृति 8 प्रकार के विवाहों का उल्लेख किया गया है -

① ब्रह्म विवाह -

→ ऐसे वर की तलाश की जाती थी जिसे वेदों का ज्ञान हो।

② दैव विवाह -

→ इस प्रकार के विवाह में एक पुरोहित के साथ कन्या का विवाह सम्पन्न किया जाता था।

→ पुरोहित को कर्मकाण्डीय ज्ञान होना आवश्यक था।

③ आर्ष विवाह -

→ आर्ष का शाब्दिक अर्थ है - ऋषि।

→ जब एक ऋषि कन्या के पिता को गाय और बैल की जोड़ी देता था तो यह समझा जाता था कि वह विवाह का इच्छुक है।

→ कन्या का पिता उस ऋषि के साथ अपनी पुत्री का विवाह विधिवत तरीके से करवाता था।

④ प्रजापत्य -

→ यह ब्रह्म विवाह के समान ही है।

→ इसमें वधू का पिता वर से सामाजिक व धार्मिक दायित्वों के निर्वहन की कसम लेता था।

☆ इन चारों विवाहों को प्रशस्त विवाह कहा जाता है।

⑤ असुर -

→ इस प्रकार के विवाह में वर पक्ष वधू पक्ष को एक निश्चित राशि या

रकम देता है जिसकी एवज में विवाह सम्पन्न किया जाता है।

→ इस निश्चित राशि या रकम को दापा कहते हैं। इसलिए इस प्रकार के विवाह को दापा विवाह कहते हैं।

→ पश्चिमी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में इस प्रकार के विवाह प्रचलन में हैं।

⑥ राक्षस विवाह -

→ इस प्रकार के विवाह में व्यक्ति कन्या से बलपूर्वक विवाह किया करता था।

→ इस विवाह को क्षत्रियों के लिए प्रशस्त माना गया था।

⑦ गन्धर्व विवाह -

→ यह एक प्रकार का प्रेम विवाह है।

→ इसमें माता-पिता की अनुमति के बिना विवाह सम्पन्न किया जाता था।

⑧ पिशाच विवाह -

→ यह सबसे निकृष्ठ विवाह का प्रकार है।

→ इसमें लड़की से अचेतावस्था में विवाह सम्पन्न किया जाता था।

→ वर्तमान समय में इस प्रकार का कार्य अपराध की श्रेणी में आता है।

Q. आर्ष विवाह से आप क्या समझते हैं ? 2 marks

Q. दापा विवाह के बारे में लिखिए। 2 marks

← जाति व्यवस्था →

→ Caste शब्द पुर्तगाली शब्द Casta से बना है जिसका अर्थ होता है - विशुद्ध प्रजाति (Original Species)।

→ जाति शब्द का सर्वप्रथम उपयोग ग्रेसिया डी ओर्टा द्वारा किया गया था।

→ परिभाषा - जाति समाज का खण्डात्मक विभाजन है जो आनुवांशिकता के आधार पर उसमें रह रहे व्यक्तियों पर भोजन, रहन-सहन और विवाह आदि पर प्रतिबन्ध लगाता है।

→ समाजशास्त्री हर्बर्ट रिजले के अनुसार यह व्यवस्था आर्यों द्वारा प्रारम्भ की गई थी।

→ उन्होंने जब यह व्यवस्था प्रारम्भ की थी तब यह कर्म आधारित थी जो कालान्तर में जन्म आधारित हो गई।

जाति व्यवस्था की विशेषताएँ -

घुर्ये के अनुसार

① समाज में विभिन्न जातियों एवं उपजातियों के अस्तित्व से सामाजिक विखण्डन को बढ़ावा मिला।

② समाज में एक संस्तरण पाया जाता है जिसके तहत् कुछ उच्च जातियाँ एवं कुछ निम्न जातियाँ होती हैं।

③ प्रत्येक जाति का एक निश्चित व्यवसाय होता है।

④ जातियों में विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्ध (खान-पान, रहन-सहन, विवाह) होते हैं।

इस व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति केवल अपनी ही जाति में विवाह कर सकता है।

⑤ प्रत्येक जाति का एक राजनीतिक संगठन होता है जिससे उस जाति विशेष के लोग आपसी जुड़ाव को महसूस करते हैं।

> प्रभु जाति - वे जातियाँ जो सामाजिक संस्तरण में निचले स्तर पर होती हैं परन्तु उनकी अधिक संख्या होने के कारण उनका राजनीतिक महत्व अधिक होता है।
>
> यह सिद्धान्त M.N. श्रीनिवास द्वारा दिया गया था।

मजूमदार और मदान के अनुसार - 'जाति एक बन्द वर्ग है।'

Imp. S.V. केतकर के अनुसार - जाति व्यवस्था की केवल दो विशेषताएँ हैं-

(i) व्यक्ति उसी जाति का कहलाता है जिस जाति के सदस्यों के यहाँ उसका जन्म होता है [जन्मजात सदस्यता]

(ii) व्यक्ति केवल अपनी ही जाति में विवाह कर सकता है।
[अन्तर्विवाह पद्धति]

<u>जाति व्यवस्था के लाभ</u> -

① समाज में श्रम विशेषीकरण को बढ़ावा मिला।

② इस व्यवस्था से समाज में शक्ति सन्तुलन स्थापित हुआ।

③ समाज में रह रहे व्यक्तियों में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ।

④ इस व्यवस्था से व्यक्तियों में उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्यपालन के प्रति जागरुकता बढ़ी।

⑤ इससे समाज में सौहार्द की भावना स्थापित हुई।

<u>जाति व्यवस्था के दोष</u> -

① यह एक अप्रजातांत्रिक व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं है।

② यह व्यवस्था व्यक्ति के विकास में बाधक है।

③ जाति व्यवस्था के राजनीतिकरण के कारण यह आर्थिक और राष्ट्रीय विकास में बाधक बनी है।

Q. वर्तमान समय में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था मजबूती एवं कमजोरी के लक्षण एक साथ प्रदर्शित करती है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए। - 5 marks

जातिगत व्यवस्था में मजबूती के कारण -

① प्रभु जाति
② जातिगत आरक्षण
③ जातिगत समूहों की अधिकता

जातिगत व्यवस्था में कमजोरी के कारण -

① धर्म सुधार
② कार्य क्षमता का महत्व
③ नई कानून व्यवस्था
④ संवैधानिक सुधार (Art. 17)
⑤ नगरीकरण
⑥ औद्योगिकीकरण
⑦ आधुनिक शिक्षा
⑧ यातायात एवं सञ्चार के साधनों का विकास

Q. जाति व्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले विभिन्न कारकों के बारे में लिखिए। - 2 marks

Q. A.K. दत्ता के अनुसार जाति व्यवस्था की विशेषताएँ लिखिए। 5 marks

① अन्तर्विवाह पद्धति
② जन्मजात सदस्यता (नियमों के उल्लंघन पर बहिष्कृत)
③ निश्चित व्यवसाय
④ खान-पान, रहन-सहन पर प्रतिबन्ध
⑤ ऊँच-नीच का भाव

← जजमानी व्यवस्था →

→ यह एक आर्थिक संविदा है जिसके माध्यम से वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान किया जाता था।

→ विलियम वाइजर के अनुसार यह एक अच्छी व्यवस्था थी जिससे समतामूलक समाज की स्थापना हुई थी।

→ लुई डुमोंट इस व्यवस्था का विरोध करते हैं। क्योंकि -

① ब्राह्मण सेवाएँ प्रदान करते थे परन्तु प्रजा नहीं कहलाते थे।

② क्षत्रिय कभी किसी को सेवा प्रदान नहीं करते थे।

③ सेवा के बदले जो वस्तु या मूल्य दिया जाता था वो पर्याप्त नहीं था।

④ कुछ वर्णों को सदैव सेवा प्रदान करनी होती थी, उन्हें किसी प्रकार की सेवा नहीं मिलती थी।

→ इस व्यवस्था में सेवा प्रदाता को प्रजा एवं सेवा प्राप्त करने वाले को जजमान कहते थे।

← वर्ग व्यवस्था →

→ समाज में समान स्थिति वाले व्यक्तियों का समूह जो एक - दूसरे से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होते हैं, वर्ग कहलाता है।

→ रॉबर्ट बीरस्टीड के अनुसार वर्ग व्यवस्था के सात आधार होते हैं -

① परिवार या रक्त समूह
② पैसा / अर्थ / सम्पत्ति
③ निवास स्थान
④ निवास की अवधि
⑤ व्यवसाय
⑥ शिक्षा
⑦ धर्म

→ वेब्लेन ने समाज को 4 मुख्य वर्गों में वर्गीकृत किया है -

① परजीवी विलासी वर्ग (Parasitic Luxurious unproductive
② पुराने रईस या नवाब (Old Noble man Class)
③ नव धनाढ्य (Neo wealthy class)
④ उत्पादक श्रमजीवी वर्ग

Q. बीरस्टीड के अनुसार वर्ग व्यवस्था के विभिन्न आधारों के बारे में लिखिए।

Q. वेब्लेन के अनुसार समाज में कौन - कौनसे वर्ग है ?

वर्ग व्यवस्था की विशेषताएँ -

① इस व्यवस्था में सामाजिक संस्तरण पाया जाता है। अर्थात् समाज विभिन्न वर्गों एवं उपवर्गों में विभाजित है।

② इसमें व्यक्ति को वर्ग विशेष की सदस्यता अर्जित करनी पड़ती है।

③ इस व्यवस्था में व्यक्ति पर खान-पान, रहन-सहन आदि का कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।

④ इस व्यवस्था में विवाह के क्षेत्र का दायरा विस्तृत है। अर्थात् अपने ही वर्ग में विवाह जैसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

⑤ इस व्यवस्था में ऊँच-नीच का भाव पाया जाता है।

⑥ इसका आकार एक पिरामिड के समान होता है जिसमें उच्च वर्ग की संख्या कम एवं उनके पास संसाधन अधिक होते हैं परन्तु निम्न वर्ग की संख्या अधिक एवं उनके पास संसाधन कम होते हैं।

⑦ इस व्यवस्था में व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति को बदलकर अपने वर्ग में परिवर्तन कर सकता है।

<u>जाति और वर्ग व्यवस्था में अन्तर</u> -

जाति व्यवस्था	वर्ग व्यवस्था
① स्थाई	① अस्थाई
② जन्मजात सदस्यता	② सदस्यता अर्जित करनी पड़ती है।
③ निश्चित व्यवसाय	③ व्यवसाय एक आधार है।
④ परिवर्तन नहीं	④ सामाजिक स्थिति में परिवर्तन कर इसे बदला जा सकता है।
⑤ बन्द व्यवस्था	⑤ लचीली व्यवस्था
⑥ खान-पान, रहन-सहन आदि पर प्रतिबन्ध	⑥ कोई प्रतिबन्ध नहीं
⑦ विवाह का सीमित क्षेत्र	⑦ विवाह का दायरा विस्तृत है।
⑧ अन्तर्विवाह पद्धति प्रतिबन्धित	⑧ विवाह करने हेतु स्वतंत्रता

८. जातितथा वर्ग व्यवस्था का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए। 5 marks

वर्ग व्यवस्था के नए आयाम -

① बुद्धिजीवी वर्ग - इसके अन्तर्गत डॉक्टर, वैज्ञानिक, शिक्षक, पत्रकार आदि आते हैं।

* यह वर्ग प्रत्येक संवेदनशील मुद्दे पर अपना मत प्रस्तुत करता है।
* राष्ट्र के विकास में यह वर्ग सहायक है।

② शासक वर्ग -

→ सत्तारूढ़ राजनीतिक दल के सभी सदस्य इसके अन्तर्गत आते हैं।

→ ये देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अपना योगदान देते हैं।

③ पूँजीपति वर्ग -

→ व्यापारियों, उद्यमियों को इस वर्ग में शामिल किया गया है।

→ यह वर्ग हमारी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

कृषि क्षेत्र में महिलाएँ

④ कृषक वर्ग -

→ भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है।

→ इस वर्ग के अधीन हमारी जनसंख्या का सबसे बड़ा हिस्सा है।

→ यह वर्ग हमारी अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभाव डालता है परन्तु वह उतना प्रभावी नहीं होता।

⑤ श्रमिक वर्ग -

→ साइकिल रिक्शा, ऑटो रिक्शा - चालक इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

→ इस वर्ग के अधीन उन व्यक्तियों को रखा गया है जो दैनिक भत्तों पर कार्य करते हैं।

⑥ नौकरशाह वर्ग -

→ नीति निर्माण एवं नीति क्रियान्वयन में ये वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

→ इसमें IAS, IPS, RAS, RPS आदि को सम्मिलित किया गया है।

तेल रिसाव हेतु क्या वैश्विक कदम उठाए जाने चाहिए।

← संस्कृतिकरण →

→ यह अवधारणा M.N. श्रीनिवास द्वारा दी गई है।

→ जब कोई निम्न जाति या जातीय समूह अपनी प्रथाओं और रीति-रिवाजों को त्यागकर उच्च जाति विशेषकर ब्राह्मण के रीति-रिवाजों व प्रथाओं को अपनाने का प्रयास करता है, तो उसे संस्कृतिकरण कहते हैं।

→ श्रीनिवास की यह अवधारणा एक लचीली व्यवस्था की ओर संकेत करती है जो सामाजिक उत्थान में सहायक है।

→ मजूमदार और मदान व केतकर की कठोर व्यवस्था की अवधारणाओं का अन्त इस अवधारणा द्वारा किया गया।

→ यह अवधारणा श्रीनिवास ने कुर्ग के लोगों पर सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण करते समय दी थी।

रामपुरा, Karnataka
M.N. Shriniwas
The remembered village (1970)
↓
1976
11 Chapters

संस्कृतिकरण की विशेषताएँ -

① यह सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन है।

② यह एक सामूहिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से निम्न जाति या जातीय समूह अपने आधुनिकीकरण को सुनिश्चित करता है।

③ इसमें केवल सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आता है और सामाजिक संरचना यथावत् रहती है।

④ इसके माध्यम से निम्न जातियाँ अपना अग्रिम समाजीकरण सुनिश्चित करती हैं।

⑤ यह एक द्विमार्गी प्रक्रिया है जहाँ निम्न जाति उच्च जाति की विचारधारा को अपनाती है वहीं उच्च जाति निम्न जाति के रीति-रिवाजों से अवगत होती है।

e.g. ब्राह्मणों द्वारा स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा की जाने लगी।

विभिन्न कारक जिन्होंने संस्कृतिकरण को प्रोत्साहन दिया -

1. ① औद्योगिकीकरण
   ② नगरीकरण
   ③ आधुनिक शिक्षा
   } ने सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देकर संस्कृतिकरण का मार्ग सरल कर दिया।

2. धर्म सुधार आन्दोलनों एवं गाँधीजी के प्रयासों ने निम्न जातियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक बनाया जिससे सामाजिक चेतना का विकास हुआ और संस्कृतिकरण को बढ़ावा मिला।

3. संवैधानिक सुधारों एवं नवीन कानून व्यवस्था ने सामाजिक कुरीतियों का अन्त किया और सामाजिक उत्थान को बढ़ावा दिया।

e.g. अस्पृश्यता का अन्त (Art. 17)

असंस्कृतिकरण

→ जब कोई उच्च जाति अपने रीति-रिवाजों एवं प्रथाओं को त्यागकर निम्न जाति के रीति-रिवाजों एवं प्रथाओं को अपना लेती है तब उसे असंस्कृतिकरण कहते हैं।

e.g. समय के साथ ब्राह्मणों ने अपनी कर्मकाण्डीय प्रथाओं का त्याग कर दिया।

पुनः संस्कृतिकरण

→ जब कोई जाति या जातीय समूह शुरुआत में अपने आधुनिकीकरण के लिए किसी उच्च जाति की विचारधारा को अपनाता है परन्तु कालान्तर में पुनः अपनी संस्कृति या विचारधारा की तरफ लौट आता है, उसे पुनः संस्कृतिकरण कहते हैं।

☆ संस्कृतिकरण की यह अवधारणा विशेषकर हिन्दू धर्म की निम्न जातियों से सम्बन्धित रही परन्तु इसे जनजातियों ने भी अपनाया है।

e.g. मध्य भारत के गोंड (Gonds)

e.g. पश्चिमी भारत के भील

पश्चिमीकरण / पाश्चात्यीकरण

→ जब पश्चिम के देशों से उनकी विचारधाराओं एवं मूल्यों को अपनी संस्कृति में लिया जाता है तो उसे पश्चिमीकरण कहते हैं।

→ यह अवधारणा M.N. श्रीनिवास द्वारा दी गई।

→ इस अवधारणा के दो रूप हैं -

① बाह्य रूप → रहन-सहन, खान-पान, भाषा

② आन्तरिक रूप → सामाजिक मूल्य एवं विचारधारा

पश्चिमीकरण के भारतीय समाज पर प्रभाव -

① आधुनिक शिक्षा को प्रोत्साहन मिला।

② जातिगत भेदभाव शिथिल पड़ गया।

③ राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा मिला।

④ पश्चिमीकरण का भारतीय स्थापत्य कला और चित्रकला पर भी प्रभाव पड़ा।

⑤ पश्चिमीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था, राजव्यवस्था व सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया।

Q. संस्कृतिकरण की विशेषताएँ बताइए। 5 marks

Q. पश्चिमीकरण से आप क्या समझते हैं? 5 marks

Q.

पश्चिमीकरण की विशेषताएँ -

① यह अवधारणा नैतिक रूप से तटस्थ है।

② यह अवधारणा व्यक्ति के एक हिस्से को प्रभावित करती है वहीं दूसरी ओर व्यक्ति का दूसरा हिस्सा इससे अप्रभावित रहता है।

③ यह अवधारणा तर्क पर आधारित है।

④ इसकी प्रकृति एवं स्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न रहती है।

Q. M.N. श्रीनिवास का समाजशास्त्र के क्षेत्र में योगदान बताइए।

पश्चिमीकरण
संस्कृतिकरण } की अवधारणा
भारतीय गाँवों के बारे मे अध्ययन
कुर्ग के लोगों का सामाजिक व आर्थिक विश्लेषण
पुस्तक - भारतीय गाँव
The Remembered village
भारतीय विवाहों के क्षेत्र भी अध्ययन किया / योगदान दिया

Q. संस्कृतिकरण का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

M.N. F.G. बैली : Caste & Economic frontier
असमानता का भाव
ज्यादातर असहमत
जटिल अवधारणा
↓
समतामूलक ← मजूमदार व केतकर
सामाजिक परिवर्तन

← सामाजिक मूल्य →

→ समाज में स्थापित वे मानक जो उसमें रह रहे व्यक्तियों के आचरण को सही या गलत ठहराते हैं।

→ राधाकमल मुखर्जी ने सामाजिक मूल्यों की परिभाषा दी है- (Inherited)

" समाज द्वारा मान्यताप्राप्त इच्छाएँ तथा अभिलाषाएँ जिनका आन्तरीकरण समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और कालान्तर में ये प्राकृतिक मानक तथा इच्छाएँ बन जाती हैं। "

→ सामाजिक मूल्य सामाजिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

→ <u>सामाजिक मूल्यों की विशेषताएँ</u>-

① सामाजिक मूल्य सामूहिक प्रकृति के होते हैं।

② सामाजिक मूल्य प्रत्येक समुदाय या समाज के भिन्न होते हैं।

③ ये गतिशील होते हैं।

e.g. एक समय सती प्रथा को समाज में मान्यता प्राप्त थी परन्तु आज के समाज में यह सही नहीं / मान्य नहीं है।

④ इनके साथ भावनाएँ जुड़ी होती हैं।

⑤ ये समाज कल्याण को बढ़ावा देते हैं।

⑥ सामाजिक मूल्यों के प्रति समाज में एकमतता पाई जाती है।

→ <u>सामाजिक मूल्यों का महत्व</u> -

① ये समाज को एकरूपता प्रदान करते हैं।

② ये सामाजिक नियंत्रण को सुनिश्चित करते हैं।

③ ये सामाजिक व्यवहारों के प्रतिक हैं।

④ ये सामाजिक भूमिकाओं का निर्देशन करते हैं।

⑤ ये हमारी भौतिक संस्कृति के महत्व को दर्शाते हैं।

Q. सामाजिक मूल्यों के बारे में लिखिए। 2 marks

Q. सामाजिक मूल्यों की क्या विशेषताएँ हैं? 5 marks

Q. सामाजिक मूल्यों के महत्व के बारे में लिखिए। 5 marks

सामाजिक मूल्यों का वर्गीकरण -

पैरी के अनुसार -

① सकारात्मक ② नकारात्मक ③ वास्तविक ④ विकासवादी

स्प्रेंगर के अनुसार -

① आर्थिक ② राजनीतिक ③ सैद्धान्तिक ④ धार्मिक

राधाकमल मुखर्जी के अनुसार -

① तात्कालिक ② अन्तर्निहित ③ विशिष्ट ④ आदर्शात्मक

Q. गरीबी की समस्या से निपटने के लिए किए गए विभिन्न सरकारी प्रयासों का उल्लेख कीजिए। 10 marks

सामाजिक मूल्यों के नियम -

① सामाजिक मूल्य परिवर्तनशील होते हैं।

② टकराव की स्थिति में व्यक्ति श्रेष्ठ सामाजिक मूल्य का चयन करता है।

③ विभिन्न सामाजिक मूल्य आपस में मिलकर मूल्यों के एक सम्मिलन (combination) का निर्माण करते हैं।

④ जब किसी मत या प्रेरणा का लम्बे समय तक समर्थन किया जाता है तो यह सामाजिक मूल्य में परिवर्तित हो जाती है।

← धर्म निरपेक्षीकरण →

→ यह एक पश्चिमी विचारधारा है जिसके बारे में सर्वप्रथम जेम्स जैकब हॉलीयोक ने बताया था।

→ धर्मनिरपेक्षीकरण का अर्थ है - धर्म का राज्य से पृथक्करण।

→ धर्मनिरपेक्षीकरण की भारतीय व्याख्या अन्य देशों से अलग है। क्योंकि हमारे यहाँ कोई आधिकारिक धर्म नहीं है व हमारी संस्कृति सर्व धर्म समभाव पर आधारित है।

→ शुरुआत में यह विचारधारा धर्म के प्रतिगामी के रूप में प्रयोग में ली जाती थी परन्तु तार्किक और बौद्धिक विकास के साथ इसकी परिभाषा में बदलाव आ गया।

→ भारतीय धर्मनिरपेक्षीकरण के तीन मुख्य स्तम्भ हैं -

① <u>वैयक्तिक</u> :- हमारे देश में व्यक्ति को संविधान द्वारा किसी भी धर्म को मानने की स्वतंत्रता दी गई है परन्तु वह अन्य धर्मों की विचारधाराओं को हानि नहीं पहुँचा सकता।

② सामाजिक - कोई भी वर्ग या समुदाय अपने धर्म की पालना कर सकता है परन्तु दूसरे धर्मों को आघात नहीं पहुँचा सकता।

③ राजकीय - सरकार सभी धर्मों के विकास के लिए प्रयास करती है और किसी धर्मविशेष को कोई विशेष दर्जा नहीं देती।

* 42th CAA, 1976 द्वारा हमारे संविधान की प्रस्तावना में इस शब्द को जोड़ा गया था।

→ भारत अन्य देशों की नजर में एक धर्मनिरपेक्ष देश नहीं है। क्योंकि -

1. हमारे देश में समान नागरिक संहिता (Art. 44) का लागू न होना

2. धर्म के मूलतत्वों को पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है।

3. धर्म के नाम पर विभिन्न संस्थानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

4. हमारे देश में धार्मिक आरक्षण प्रदान किया गया है।

→ भारत इन सभी कारणों का विरोध करता है और स्वयं को एक धर्म निरपेक्ष देश बताता है। क्योंकि -

① धार्मिक विचारधाराओं के मूल सार को हमारे पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

② समान नागरिक संहिता के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सरकार प्रयासरत है।

③ अल्पसंख्यक संस्थानों को आर्थिक सहायता धार्मिक विकास के लिए नहीं अपितु सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए दी जाती है।

④ धार्मिक दंगों के पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए समितियों एवं आयोगों का गठन किया जाता है। → Feedback Mechanism

⑤ धर्म में राजनीति का प्रयोग न करके हम स्वयं को एक मजबूत धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

8. भारत में धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करने के लिए क्या प्रयास किए जाने चाहिए? - 5 marks

धर्मनिरपेक्षीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव -

① तार्किकता में वृद्धि हुई जिससे विभिन्न घटनाओं को धर्म के स्थान पर तर्क के आधार पर आँका जाने लगा।

② धर्मगुरुओं का वर्चस्व समाप्त हुआ तथा पञ्च प्रथा भी समाप्त हुई।

③ ग्रामीण क्षेत्रों का राजनीतिकरण प्रारम्भ हुआ जिसने विकास को बढ़ावा दिया।

④ इसने हमारी आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया

Q. धर्मनिरपेक्षता से आप क्या समझते हैं? भारतीय धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के मुख्य लक्षणों का वर्णन कीजिए।

→ तार्किक एवं वैज्ञानिक शिक्षा के प्रसार द्वारा धार्मिक प्रभावों का उन्मूलन धर्मनिरपेक्षता कहलाता है।

→ इसके लक्षण -

① भारत में कोई आधिकारिक धर्म नहीं है। यहाँ सभी धर्मों के विकास कार्यों पर ध्यान दिया जाता है।

② भारतीय संविधान का अनुच्छेद - 25 नागरिकों को किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

③ भारतीय संविधान के अनुच्छेद - 26 और 27 के अनुसार राज्य किसी भी प्रकार के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता।

④ सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के अधिकार एवं अवसर की समानता प्रदान की गई है।

Q. बाल अपराध (Juvenile Deliquency) किसे कहते हैं?

→ बच्चों द्वारा किया गया कोई भी कार्य जो समाज में स्वीकार्य नहीं है।

→ बच्चों द्वारा किया गया असामाजिक और अनैतिक कार्य जो वयस्कों के लिए दण्डनीय है।

→ यह समस्या समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

Q. बाल श्रम (Child Labour) किसे कहते हैं?

→ वह कार्य जो बच्चों की अनिवार्य शिक्षा एवं मनोरंजन में बाधा उत्पन्न करता हो।

→ भारत में 14 वर्ष से कम आयु सीमा के बच्चों द्वारा किसी भी प्रकार का कार्य करवाना बाल श्रम कहलाता है परन्तु अमेरिका में यह आयु सीमा 12 वर्ष है।

→ 14-18 वर्ष की आयु सीमा के बच्चों को विद्यालय के बाद 3 क्षेत्रों में कार्य करने की छूट दी गई है -

① घरेलु कार्य
② खेल उद्योग
③ ऑडियो - विजुअल उद्योग

→ इस आयु सीमा के बच्चों [14-18] पर सर्कस में कार्य करने पर पूर्ण प्रतिबन्ध है।

प. बंगाल के नक्सलबाड़ी गाँव से प्रारम्भ (किसानों द्वारा जमींदार के खिलाफ)

Q. नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्रों में क्या सेना को लगाया जाना चाहिए ? अपने सुझाव दीजिए।

→ नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सेना को लगाया जाना उचित नहीं है। क्योंकि-

① भारतीय सेना का प्रशिक्षण छापामार युद्ध पद्धति के अनुरूप नहीं है।
② यह हमारे लिए वैश्विक साख का विषय है।
③ सेना को इन क्षेत्रों की विशेष जानकारी प्राप्त नहीं है।

→ इस समस्या से निपटने के लिए हमें निम्न उपाय अपनाने चाहिए -

① एक वार्ता का मञ्च बनाया जाना चाहिए।
② राज्य पुलिस के एवं केन्द्रीय सशस्त्र बलों के जवानों को बेहतर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। (पुलिस)
③ स्थानीय लोगों को समझाकर उस क्षेत्र विशेष की जानकारी इकट्ठी की जा सकती है जो इस समस्या से निपटने में सहायक होगी।
④ उस क्षेत्र विशेष के लोगों के लिए योजनाओं का निर्माण एवं प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

Q. सलवा जुडूम से आप क्या समझते हैं ? 2 Marks

→ महेन्द्र कर्मा की अध्यक्षता में आम नागरिकों द्वारा चलाया गया एक नक्सलविरोधी अभियान जिसे कालान्तर में सर्वोच्च न्यायालय ने असंवैधानिक करार दिया।